International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिंदी में आधुनिकतावाद की अवधारणा

डॉ. रेणु बाली
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यसंतराव नाईक शासकीय कला व समाजविज्ञान संस्था,
नागपुर
ईमेल : renubaliindia@rediffmail.com

'आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द' में डॉ. बच्चन सिंह ने आधुनिकतावाद के बारे में लिखा है– 'आधुनिकतावाद' की व्याख्या करने की जितनी ही कोशिश की गयी है यह उतनी ही अव्याख्येय बनती गयी। हिन्दी में इसे लेकर काफी बहसें हुई, धारावाहिक लेख लिखे गये, गोष्ठियां हुई, लेकिन अजगर की तरह यह अडिग बना रहा। जो व्याख्याएं प्रस्तुत की गयीं वे परस्पर विरोधी, अपर्याप्त और अधूरी थी। कोई इसे प्रक्रिया कहता है तो कोई आत्मचेतना। कोई इसे क्षणवाद से जोड़ता है तो कोई शाश्वतता से। कोई इसे इतिहास के अगले चरण से सम्बद्ध करता है तो कोई इतिहास–मुक्त मानता है।

मुख्यतः इसकी तीन विशेषताएं हैं – स्वात्मचेतना, आंदोलन और प्रयोग। स्वात्मचेतना की शुरूआत प्रयोगवादी आंदोलन से होती है। छायावादी कवियों में वैयक्तिकता का जो बोध पाया जाता है, यह कहीं–न–कहीं परम्परा से भी जुड़ी हुई है। वैयक्तिकता का अतिरिक्त आग्रह स्वात्मचेतना है। यहीं पर कवि अपने पाठकों से दूर पड़ जाता है और प्रेषणीयता, साधारणीकरण की समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। कविता दीक्षागम्य हो जाती है। इस कठिनाई का ध्यान 'तारसप्तक' के सम्पादकीय में हमें मिलता है। 1955 में आलोचना में 'व्यक्तिस्वातंत्र्य' पर लोगों के जो विचार आमंत्रित किये गये वे इसी दिशा में अगले चरण हैं। 1960 के बाद तो यह आंदोलन का रूप ले लेता है। 'कल्पना', 'ज्ञानोदय', 'नई कविता' में ढेरों लेख छपे। इन लेखों में सामान्यतः इतिहास–विरोधी रूख अपनाया गया। यह रूख एक प्रकार का आंदोलन था जो प्रगतिशील आंदोलन के विरोध में खड़ा हुआ। एक लेखक ने तो स्पष्ट रूप से विषय–वस्तु की अहमियत को नकारते हुए आधुनिकतावाद की समस्या को अभिव्यक्ति की समस्या भी घोषित कर दिया था।

पश्चिम में 'आधुनिकतावाद' के प्रादुर्भाव के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कारण थे– उद्योगीकरण, पूंजीवादी व्यवस्था, अस्तित्ववादी दर्शन, दो–दो महायुद्ध। इनके संदर्भ में जो गहन मानवीय संकट उपस्थित हुआ उसमें व्यक्ति की अस्मिता खो गयी थी। इस संकट का बोध अनेक रूपों में हुआ– अजनबियत, रिश्तों का टूटना, मनुष्य का पदार्थीकृत होना आदि। इसकी अभिव्यक्ति पिकासो के बार्सीलोना के वेश्यागृह के चित्र, पाउंड के 'परसोना', ज्वायस लारेंस आदि के उपन्यासों, इलियट के 'वेस्टलैंड' क्यूबिस्ट और अतियथार्थवादी चित्रकला के आंदोलन में हुई। काफ्का के उपन्यास, मायकोवस्की की भविष्यतवादी कविताएं, बैकेट के नाटक –उपन्यास आदि इसी की देन हैं। इसमें संदेह नहीं कि ये बीसवीं शताब्दी के महत्त्वपूर्ण नाम हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उन्हीं कारणों की गणना की गयी जो पश्चिम के आधुनिकतावादी आंदोलन के मूल में थे। हाँ, इसमें भारतीय आजादी को भी एक कारण कहा गया।

हिन्दी में आधुनिकतावाद सम्बन्धी अवधारणा के साथ कठिनाई यह रही है कि उसे आधुनिकता, आधुनिक संवेदन और आधुनिक भाव–बोध के साथ समरस करके देखा जाता रहा है। जिसके कारण उसे कभी प्रक्रिया, कभी मूल्य–बोध, कभी भाव–बोध और कभी आंदोलन के रूप में देखा गया। आधुनिकतावाद का एक सामान्य संदर्भ और अर्थ में जो प्रयोग किया जाता रहा, उसने आधुनिकतावाद के बारे में न केवल भ्रम का सृजन किया, बल्कि हिन्दी साहित्यालोचना, समीक्षा और शोध के लिए समस्याएं भी पैदा की। इसलिए आधुनिकतावाद के बारे में डॉ. बच्चन सिंह की चिंता हमें अस्वाभाविक नहीं लगती। फिर भी कुछ आलोचकों और विद्वानों ने आधुनिकतावाद के बारे में अपने छिटपुट विचार भी अभिव्यक्त किये हैं।

आधुनिकतावाद के बारे में गंगाप्रसाद विमल ने लिखा है– "आधुनिकतावाद एक फैशन के रूप में उच्च वर्गों तथा अभिजनों के आडम्बरपूर्ण जीवन का पर्याय बन जाता है। विकसित देशों, विशेषकर पूंजीवादी देशों में यह पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्विरोध के कारण रुग्ण मानसिकता तथा अजनबीपन, अकेलेपन, मृत्युबोध में रूपांतरित हो जाता है। यह आश्चर्यजनक साम्य दो भिन्न कालखंडों में, दो भिन्न देशीय क्षितिजों में किस तरह कार्यरत होता है इसकी मिसालें पश्चिमी दुनिया के नित नए बदलते साहित्य–कलागत आंदोलन और अविकसित देशों के उच्चवर्गों की जीवन–क्रियाओं, उनके रहन–सहन में हमें देखनेको अवश्य मिली। खोजी जा सकती है। स्पष्ट है, दोनों स्थितियों में यह पूंजीवादी व्यवस्था के कारण होता है। मूलतः ऐसा आधुनिकतावाद, व्यक्तिवाद, मूल्यवाद, अलगाववाद आदि के रूप में व्यंजित होता है और मानवीय स्थितियों का विरूपण करने लगता है और पिछड़ेपन की व्याधियों से ग्रस्त दुनिया को खंडित कर एक नई निर्वैयक्तिक किस्म की, भावुकता– विहीन दुनिया बनाता है।"[1] गंगाप्रसाद विमल ने विचारधारात्मक स्तर पर आधुनिकतावाद को परिभाषित किया है और पश्चिमी आधुनिकतावाद को एक फैशन और एक प्रकार के छद्म के रूप में देखा है, जबकि धनंजय वर्मा आधुनिकतावाद को अन्तः संघर्ष की उपज के रूप में पाते हैं। उन्होंने लिखा है, "आधुनिकता का आंदोलन, जिसे निश्चित रूप से आधुनिकवाद का आंदोलन कहना चाहिए, एक अन्तः संघर्ष की उपज है, जिसमें सम्पूर्ण आधुनिक विश्व के साक्षात्कार की प्रेरणा थी। नृतत्वशास्त्र और मिथक, मनोविश्लेषण और मार्क्सवाद तथा इलियट और ऑडेन सरीखे कवियों का दाय इस आंदोलन के उल्लेखनीय मोड़ों में एक था। यह आंदोलन प्रथम विश्वयुद्ध के तत्काल पहले अपनी चरम सीमा पर था और सम्पूर्ण कलाएं इससे प्रभावित थीं। यह मूलतः चित्रकारों का आंदोलन था, कविता में तो यह परवर्ती प्रभाव के रूप में उभरा। फ्रांस में अपोलेनियर ने पिकासो का और अमरीकी कवि एजरा पाउंड ने गोण्डियर ब्रेजस्का का अनुवर्तन किया था। इसके मूल्य और प्रतिमान भी चित्रकला से प्रेरित थे। प्रयोजन यह था कि कलाकार अपनी संवेदनशीलता और अपने बिम्बों के अन्वेषण के माध्यम से आधुनिक दुनिया के अनुभवों को प्रतिबिम्बित करे और उसमें सुधार और परिवर्तन के लिए उसकी भाषा बोले और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इतिहास और परम्परा से मुक्ति

आधुनिकतावाद का जन्म इतिहास और परम्परा के विरूद्ध विद्रोह के रूप में हुआ था इसलिए इसे इतिहास और परम्परा मुक्त आंदोलन के रूप में देखा जाना स्वाभाविक ही था। अतः धनंजय वर्मा ने इसके इतिहास और परम्परा विरोधी स्वरूप के बारे में विचार करते हुए लिखा, "आधुनिकतावाद की प्रतीज्ञा इस आंदोलन के संदर्भ में कदाचित परम्परा को नकारने की रही है। कविता में अपरम्परावादी और आधुनिक होने के लिए भी परम्परा की आधार भूत चेतना अन्य कलाओं की अपेक्षा कदाचित अधिक अनिवार्य है। इसीलिए संभवतः कविता में आधुनिकता अन्य कलारूपों विशेषतः चित्रकला की आधुनिकता की पश्चवर्ती रही है।[3] डॉ. कुंवरपाल सिंह ने भी इसके इतिहास–विरोधी स्वरूप के बारे में लिखा है, "आधुनिकतावाद ही यह मान्यता रही है कि इतिहास, यथार्थ, समय, अपने आप में कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति का अनुभव का जितने से ताल्लुक है, वही इतिहास है, वही समय भी है।[4] इस इतिहास–मुक्त अवधारणा के आधार पर ही लुकाच ने आधुनिकतावाद के पतनशील मूल्यों से आगाह करते हुए इसे साहित्य और कला के निषेध के रूप में देखा था। लुकाच की आधुनिकतावादी अवधारणा का अनुसरण करते हुए डॉ. कुंवरपाल सिंह ने लिखा है–"आधुनिकतावाद पूंजीवादी विचारधारा के पतनकाल की देन है। यह कला और कलाकार दोनों और कलाकार दोनों को रूग्ण बनाता है। यथार्थ–विरोधी इस आधुनिकतावाद ने मतांध फिकरों का दामन थामा है। इसकी मूलभूत विशेषता यह है कि यह यथार्थ को विकृत रूप में प्रस्तुत करता है। मनुष्य को उसके बाहरी परिवेश से जुदा करके पेश करता है। व्यक्ति अनुभवों को अंतिम प्रमाण मानकर चलता है। इसके लिए इतिहास नाम की कोई चीज नहीं है। यह साहित्य को किसी भी व्यापक परिप्रेक्ष्य से छीनकर दरिद्र बनाता है। यह केवल परम्परागत कला रूपों का ही विनाश नहीं करता, अपनी अंतिम परिणति में स्वयं कला का विनाश करने लगता है। इसका आक्रोश, विद्रोह सभी कुछ लक्ष्यहीन होने के कारण अर्थहीन और नपुंसक हो जाते हैं।[5]

पश्चिमी आधुनिकतावादी साहित्यांदोलन के सूत्रों का विकास हिन्दी आधुनिकतावादी साहित्य ने उन्हीं संदर्भों में किया था जिन संदर्भों में पश्चिम ने किया था। अतः उसी ही आधार पर इतिहास और परम्परा–मुक्त साहित्य का नारा देकर उसे क्षणजीवी और स्मृतिहीन बना दिया था। अशोक वाजपेयी ने सीताकांत महापात्र की 'प्रतिनिधि कविताएं' की भूमिका में, हिन्दी में विकसित आधुनिकतावाद और उसकी स्मृतिहीनता पर टिप्पणी करते हुए लिखा है–"सीताकांत महापात्र के पास आधुनिकता के सभी औजार हैं : प्रखर बौद्धिकता, निपट अकेलापन, अथक पीड़ा, गहरा आत्मान्वेषण और अनेक भाषायी परम्पराओं से सीधा सम्पर्क। लेकिन ये ऐसे कवि हैं जिनकी स्मृति नष्ट नहीं हुई है। सीताकांत महापात्र की कविता हिन्दी में समकालीन कविता में व्याप्त इतिहासहीनता और स्मृतिहीनता के बरअक्स एक शक्तिशाली सृजनात्मक विकल्प प्रस्तुत करती है और कुछ ऐसे सवाल उठाती है जो हिन्दी में विकसित आधुनिकतावाद की पूर्णता और प्रासंगिकता पर पुनर्विचार के लिए बाध्य करते हैं।[6] इस टिप्पणी से न केवल आधुनिकतावादी औजारों की पुष्टि होती है, बल्कि आधुनिकतावाद की स्मृतिहीनता और इतिहास–विहीनता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की भी। डॉ. मैनेजर पांडेय ने भी आधुनिकतावाद की समाज–विमुखता और इतिहासहीनता पर विचार करते हुए लिखा है, "आधुनिकतावादी चिंतन व्यक्ति केन्द्रित वर्तमान और वर्तमान केन्द्रित व्यक्ति के अस्तित्व की समस्याओं और संकटों से सम्बद्ध चिंतन बन गया है। वर्तमान के सीमित संदर्भ में व्यक्ति की अस्मिता और उसके अस्तित्व के संकटो पर विचार करना ही आधुनिकतावादी चिंतन का लक्षण माना जाता है। यह विचारधारा मनुष्य के अलगाव की समस्या पर विचार करने के बावजूद अलगाव को गहराती है। साहित्य के क्षेत्र में ऐसे चिंतन के फलस्वरूप कला, कलाकार, आलोचक और पाठक इतिहास से बाहर होते हैं। यह विचारधारा और इतिहास दोनों से मुक्ति की विचारधारा है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के वैचारिक भावात्मक अन्तर्जगत और उसके भौतिक सामाजिक बाह्य जगत, चेतना और परिवेश के सम्बन्धों को स्वीकार किया जाता है। इसमें वस्तुगत सम्बन्ध अमूर्त हो जाते हैं, सम्बन्धों की खोज निरर्थक हो जाती है या सम्बन्धों की निरर्थकता की खोज की जाती है।[7] इस तरह आधुनिकतावादी अवधारणा को समाज और इतिहास से विच्छिन्न करके उसे व्यक्तिजीवी और क्षणजीवी बना दिया गया।

समसामयिकता

पश्चिम में आधुनिकतावादी अवधारणा को जिस तरह स्टीफन स्पेंडर आदि के द्वारा समसामयिकता से सम्बद्ध किया गया था उसी तरह हिन्दी में भी विजयदेवनारायण साही और लक्ष्मीकांत वर्मा आदि के द्वारा आधुनिकतावाद की अवधारणा को समसामयिकता से सम्बद्ध किया गया। लक्ष्मीकांत वर्मा ने लिखा है, "आधुनिकता एक ऐतिहासिक विश्लेषण है जो हमें देश–काल का बोध देती है, समसामयिकता देश–काल के बोध के साथ सक्रियता की भी पुष्टि करती है। जिस भी देश–काल मे हम हैं उसकी सीमाएं और विस्तार को हम समसामयिकता के यथार्थ द्वारा अनुभव करते हैं। जीवन के द्वन्द्वी संदर्भों में आधुनिकता के परिवेश और समसामयिकता के आयाम में, हमें अपनी दृष्टि और दायित्व का बोध होता है।[8] आधुनिकतावाद को समसामयिकता के रूप में देखे जाने वाली मान्यता के बारे में रमेशकुंतल मेघ ने लिखा है, "कभी–कभी आधुनिकता को भी आधुनिकवाद (माडर्निज्म) बताकर समाप्त किया जाता है तथा समसामयिकता (कंटेम्पोरेरी) के सामयिक (टाइमली) बोध की संक्रांति एवं चिंता को केन्द्रीय धारणा के रूप में स्थापित किया जा रहा है। लेकिन विकसित यूरोप के परिप्रेक्ष्य मे हम आधुनिक युग तथा आधुनिकता को बहुधा पृथक या विभक्त नहीं कर पाते। यहां आधुनिक परम्परा के अन्तर्गत पिकासो से लेकर पालक्ली तक, शॉपेनहावर से लेकर सार्त्र तक, गैलेलियो से लेकर फर्मी तक, कीट्स से लेकर काफ्का और मिलर तक उसमें शामिल हो जाते हैं।[9]

आधुनिकतावाद के इस इतिहास, परम्परा और समसामयिकता सम्बन्धी मान्यता के विपरीत फिर अंग्रेजी आधुनिकतावादी साहित्य का विकास हुआ। इसीलिए अंग्रेजी आधुनिकतावाद न केवल प्रकृति की ओर वापसी, वरन परम्परा, धर्म, आध्यात्म की ओर वापसी और एक प्रकार की नास्टेल्जिया में अभिव्यक्त हुई। अंग्रेजी आधुनिकतावादी कविता के प्रमुख कवि टी.एस. इलियट ने तो स्वयं को धर्म में कैथोलिक, राजनीति में एकतंत्र शासन में विश्वास रखने वाला और विचारों में परम्परावादी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

घोषित किया था। इस तरह अंग्रेजी आधुनिकतावाद का संकीर्णतावादी स्वरूप सामने आता है, जिसे भ्रमवश सम्पूर्ण आधुनिकतावाद का पर्याय मान लिया जाता है और इसी आधुनिकतावाद से हिन्दी साहित्य भी कुछ अधिक ही परिचित हो गया था। इसी आधुनिकतावाद के बारे में विजयदेव नारायण साही ने लिखा है, "साहित्य के क्षेत्र में यह शब्द आधुनिकता अंग्रेजी के मॉडर्निटी के बराबर इस्तेमाल होता रहा, यही मॉडर्निटी या कभी–कभी मॉडर्निज्म। तो इंगलिस्तान में, जिससे हम लोक कुछ अधिक परिचित हैं, शब्द मॉडर्निटी का एक विशेष प्रकार के साहित्यिक संदर्भ में प्रयोग हुआ जिसमें आगे आगे टी. एस. इलियट की कविता थी और उसके आस–पास और भी लोग थे। अब भी अंग्रेजी साहित्य के संदर्भ में बीसवीं शती में 1980 में मॉडर्निज्म या मॉडर्निटी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है तो उसे अंग्रेजी साहित्य में उस मानसिक वातावरण का पर्याय माना जाता रहा है जो इलियट और पाउंड के साथ था – इनके साथ और भी बहुत से लेखक रहे जो इंगलैंड में तीसरे–चौथे दशक के लेखक थे।"[10] आधुनिकतावाद के सम्बन्ध में जो आधार और मान्यताएं इलियट और पाउंड की रही हैं हिन्दी में वही अज्ञेय, धर्मवीर भारती, विजयदेवनारायण साही और लक्ष्मीकांत वर्मा की रही हैं।

स्वच्छंदता–विरोध

पश्चिमी और स्वयं हिन्दी के आधुनिकतावादी अवधारणा का कमोबेश सम्बन्ध रोमैंटिसिज्म से रहा है। आरंभिक आधुनिकतावाद ने रोमैंटिसिज्म का विरोध किया तो बाद के आधुनिकतावाद ने उसे स्वीकार किया। यह बात जितनी पश्चिम के संदर्भ में सच है उतनी ही हिन्दी के भी। यद्यपि कहा यह गया कि यह रोमैंटिसिज्म भावुकता के विरूद्ध आधुनिकतावादी बुद्धिवाद का विद्रोह था। फिर रोमैंटिसिज्म का विरोध करने वाले भी उसके प्रभाव से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाये। आधुनिकतावादियों को लगा कि बिना रोमैंटिसिज्म का विरोध किये आधुनिकतावाद को जैसे प्रतिष्ठित ही नहीं किया जा सकता; जैसा कि विपिन कुमार अग्रवाल ने लिखा है, "आज का कवि आलोचक, रोमैंटिसिज्म को आधुनिकता के लिए घातक मानता है। उसे लगता है कि ज़रा–सा रूमानी तत्व आया नहीं कि सब ढह जायगा।"[11]

महायुद्धों का त्रासद–बोध

आधुनिकतावादी अवधारणा को महायुद्धों से उत्पन्न परिस्थिति के प्रतिफलन के रूप में भी देखा जाता रहा है। क्योंकि आधुनिकतावादी साहित्य और कला का एक बड़ा हिस्सा विश्वयुद्ध की त्रासदी से प्रभावित होकर सृजित हुआ था, जिसने विश्वयुद्धों के दौरान विघटित मानवीय मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति की। इन विघटित मूल्यों के बारे में डॉ. रघुवंश ने लिखा है, "बीसवीं शताब्दी का यूरोप युद्धों और संक्रांतियों के बीच गुजरा है। इस बीच वहां का व्यक्ति कुंठा, अनास्था, विघटन, संत्रास, निराशा और अकेलेपन की मनःस्थितियों से गुजरा है। उसकी उन्नीसवीं शती से पहले वाली बहुत सी आशाएं, आकांक्षाएं और आस्थाएं खंडित हुईं, जिन मूल्यों को बहुत मान दिया गया था, उनका विघटन हुआ है।"[12]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसी विघटन ने आधुनिक भाव–बोध को निर्मित और प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी के इस विघटन के लिए बहुत हद तक विज्ञान जिम्मेदार है। यहां विज्ञान की बहुत बड़ी त्रासद एवं नकारात्मक भूमिका उभर कर सामने आती है, जबकि हम इसके पूर्व विज्ञान के सकारात्मक पक्षों से और उसकी वैज्ञानिक दृष्टि से ही परिचित थे, और इस वैज्ञानिक चिंतन की धारणा से हमने आधुनिकतावादी अवधारणा को सम्बद्ध माना था। यह वैज्ञानिक चिंतन एक तरह से आधुनिक चिंतन था जिसने आधुनिक साहित्य और कला को प्रभावित किया था और आधुनिकता को एक विशिष्ट पहचान दी थी। कुंवर नारायण ने लिखा है, "विज्ञान या वैज्ञानिक चिंतन का एक मतलब जहां शुद्ध भौतिक यथार्थ की छान–बीन से जुड़ा वहीं उसका दूसरा और शायद ज्यादा गहरा मतलब एक खास तरह की मानसिकता यानी तर्क विवेचन, विश्लेषण, संश्लेषण, अन्वेषण, प्रयोगशीलता आदि से जुड़ा है। जिसके प्रत्यक्ष या परोक्ष असर ने आज के साहित्य और कला को यह विशिष्ट पहचान दी है जिसे हम आधुनिक कहते हैं।"[13]

अस्तित्ववाद

आधुनिकतावादी अवधारणा का विकास चूंकि विश्वयुद्धों के दौरान अस्तित्ववादी साहित्य और चिंतन के विकास के रूप में हुआ था इसलिए अस्तित्वत्वादी समस्याओं के साथ अध्यात्मवादी और रहस्यवादी प्रवृत्तियों की भी अभिव्यक्ति आधुनिकतावादी कृतियों में देखने को मिली। इस तरह अस्तित्ववादी– आधुनिकतावादी चिंतन–मनन का विकास विश्वसहीनता और जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टि के रूप में दिखाई दिया, जिसे एक समय 'सम्पूर्ण सत्य' के रूप में प्रचारित किया गया था। डॉ. धनंजय वर्मा ने लिखा है, "आधुनिकतावादियों का प्रधान स्वर जीवन की निरसारता और निरर्थकता का रहा है। ये कहते हैं कि हमारा युग विश्वासहीनता का है, मगर इस विश्वासहीनता में ही उनका अंधविश्वास है। गौर से देखा जाए तो अस्तित्ववादी दर्शन की यह निरर्थकता और विसंगति एक क्षणवादी बोध का परिणाम है। हम उसे गलत नहीं कहते, लेकिन यह सत्य का सिर्फ एक पड़ाव ही है। यह खण्ड सत्य है, सम्पूर्ण सत्य नहीं है।"[14] आधुनिकतावादी साहित्य और चिंतन की यह सीमा ही है कि जिसमें सामाजिक जीवन और मूल्य पूरी तरह ओझल कर दिये जाते हैं। आधुनिकतावाद के इस स्वरूप–सीमा के बारे में धनंजय वर्मा ने लिखा है, "आधुनिकतावादी व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों के बदले मनुष्य और नियति पर जोर देते हैं। ये कदाचित मूल्यहीनता और मूल्य अराजकता को ही मूल्य का दर्जा देना चाहते हैं या फिर इलियट की तरह नव्यशास्त्री मूल्यों को पुनरूज्जीवित करना चाहते हैं।"[15] आधुनिकतावादी अवधारणा का विकास ही आधुनिकतावादी साहित्य और कला द्वारा सामाजिक जीवन–मूल्यों के अवमूल्यन से भी हुआ है। नकारात्मक मूल्यों के कारण ही अराजकता, अमानवीयकरण, अ–साहित्य (एण्टीलिटरेचर) अ–कला (एण्टीआर्ट) की बात की गई। इस संदर्भ में आधुनिकतावादी अवधारणा की विचार–दृष्टियों के बारे में विचार करते हुए रमेशकुंतल मेघ ने लिखा है, "जिन तत्त्वों ने आधुनिकवाद (माडर्निज्म)" का भ्रम फैलाया ये तत्त्व मूलतः पांच हैं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. तर्कशीलता (रीजन) से पश्चगम या रिट्रीट।
2. एगंस्ट की और पश्चगमन
3. सार्वजनिक के विरोध में व्यक्तिगत की ओर पश्चगमन।
4. जीवन से कला का, तथा समाज से व्यक्ति का तथा इतिहास से स्वतंत्रता का अलगाव।
5. स्वयं आधुनिक जीवन से जुगुप्सा।[18]

इस तरह आधुनिकतावाद के संदर्भ में जिस मानवीय संकट, मूल्यहीनता अनास्था, आकंठ अवसाद, भय, आशंका, संशय, अनिश्चय, क्षोभ, आक्रोश, व्यंग और विद्रूपता, विडम्बना और अजनबीपन की बात की गई। उसका सम्बन्ध जितना विश्वयुद्ध की त्रासद स्थिति से है उतना ही शीतयुद्ध की राजनीति से भी, जिसके पीछे पूरा यूरोप दो खेमों में बंटा हुआ था। विष्णुचंद्र शर्मा ने लिखा है, "यूरोप में आधुनिकतावाद के पीछे सभ्यता के दो खेमे थे। दोनों आमने–सामने थे। एक को रूपवाद और व्यक्तिवाद की आधुनिकता कहेंगे। दूसरा मार्क्सवाद है। दूसरे महायुद्ध के बाद पूरा विश्व पूंजीवाद और समाजवाद के दो खेमों में विकसित हो गया था।[17] इन खेमों की आधुनिकतावादी अवधारणा के बारे में धनंजय वर्मा ने लिखा है, "सम्प्रति आधुनिकता को आधुनिकतावाद के समरस कर दिया गया है और यह राजनीति–निरपेक्ष, शुद्ध कलावादी आंदोलन है। पश्चिमी पूंजीवादी देश, इस आधुनिकता के प्रचारक हैं, इसके विपरीत समाजवादी और साम्यवादी देशों का साहित्य, यथार्थवाद पर जोर देता है। आधुनिकतावाद विश्रृंखलित मानसिक स्थितियों का आत्मपरक वर्णन करता है, जबकि यथार्थवाद एक स्वस्थ्य और नये मनुष्य की रचना करना चाहता है। आधुनिकतावाद यथार्थवाद की स्थूलता के प्रति विद्रोह के रूप में भी खूब प्रचारित किया गया है। यह अब तब विकसित सभी मानव मूल्यों की अस्वीकृति से आरम्भ करके किसी नये भविष्य में अविश्वास तक जाता है।[18]

महानगरीय बोध

आधुनिकतावादी अवधारणा को हिन्दी में भी महानगरीय बोध से सम्बद्ध किया जाता है और आधुनिकतावादी साहित्य में महानगरीय–बोध की गहन अभिव्यक्ति भी हुई है। इसे पश्चिमी आधार के रूप में ही देखा गया है। डॉ. रघुवंश ने लिखा है, "पश्चिम की मनःस्थिति और उसकी मूल्यों की संक्रांति की परिस्थिति को कभी आधुनिक युग–बोध के रूप में माना गया है। और इधर भौगोलिक सीमाएं संकुचित होती गई हैं, देश निकट आते गए हैं। अन्तराष्ट्रीय राजनीति और उसके पीछे आर्थिक नीतियों के कारण एक और बौद्धिकों का वर्ग पश्चिम की इस परिस्थिति और संक्रांति को आधुनिकता का प्रमाण मानकर उसे अपने अनुभव और लेखन का संदर्भ स्वीकार करता रहा है। क्योंकि पश्चिम की परिस्थिति का अधिक एहसास महानगरों में हो सकता है, इस कारण ऐसे लेखक महानगर के जीवन और उसके अनुभव को ही साहित्य में आधुनिकता की कसौटी मानकर चलते हैं।[19] डॉ. रघुवंश हिन्दी में महानगरीय बोध वाली आधुनिकतावादी अवधारणा को पश्चिमी प्रभाव से ही निर्मित मानते हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है, "भारतीय महानगरों की स्थिति पश्चिमी महानगरों से भिन्न है। पश्चिम के महानगर, लंदन, पेरिस, प्राग, बर्लिन या मास्को किसी को ले सकते हैं, अपने देश की व्यापक तथा विशिष्ट परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने सारे विश्वनगर होने के माहौल में ये अपनी सांस्कृतिक परम्परा से पूरी तरह जुड़े हैं। पर हमारे नगर पश्चिमी प्रभाव में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकसित हुए हैं, और अपने विकासकाल में एक विशेष प्रकार के हीन भाव से ग्रस्त रहे हैं।[20] डॉ. रघुवंश की इस मान्यता से प्रकारान्तर से यह ध्वनित होता है कि एक तरह से पश्चिमी आधुनिकतावाद यहाँ के देश–काल की परिस्थिति में रोपित है, सृजित नहीं।

डॉ. रघुवंश की इस मान्यता से पूर्णत: सहमत नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि पश्चिमी प्रभाव के अलावा भी स्वयं की समस्याएं तो थी ही और चूंकि सबसे पहले आधुनिकीकरण महानगरों का ही होता है, इसलिए आधुनिकता की भयावहता को बोध हिन्दी की आधुनिकतावादी कृतियों में देखा जा सकता है। साथ ही पश्चिमी आधुनिकतावाद का स्वरूप तो हमारे सामने था ही। गंगाप्रसाद विमल ने लिखा है, "नगर–गांव के द्वन्द्व नगरीकरण, औद्योगीकरण समाजों का निर्माण प्रजातांत्रिक, धुर्वीकरण, संयुक्त परिवारों का विघटन, मौन स्वातंत्र्य की लहर, मनोलोक की जटिलताएं, अकेलापन, असुरक्षा, आत्मनिर्वासन आदि ऐसे विषय हैं, जिनके आधार हिन्दी लेखकों की रचनाओं में मिलते हैं। आधुनिकता की विभिन्न आकृतियां, जो यूरोपीय समाज में कल तक बहुत तीव्र थीं, सांस्कृतिक संक्रमण के रास्ते भारतीय रचनाभूमि की आधार भी बनी हैं। उन्हें पश्चिमी अनुकरण या विधर्मी चीज मानने की गलती करना उचित नहीं होगा। विमानवीकरण की जो प्रक्रियाएं प्रत्यक्षत: यूरोपीय या पश्चिमी जनमानस को भोगनी पड़ रही हैं। अजनबीपन या अकेलापन एक वैश्विक प्रभावधारा है।[21] ऐसा भी नहीं था कि हमारे महानगर पश्चिमी महानगर हो गए थे, और पश्चिम जैसी स्थिति भारतीय समाज की या भारतीय महानगरों की हो गयी थी। निश्चय ही हमारी स्थिति पश्चिम की स्थिति से भिन्न थी। फिर भी हमारे आधुनिकतावाद की निर्मिति में पश्चिम का ही प्रभाव अधिक रहा है। अत: प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी आधुनिकतावादी सर्जनशीलता ने पश्चिमी आधुनिकतावादी सृजनशीलता को किस स्तर पर स्वीकार किया है और किस तरह उसका उत्तर दिया है। रमेशचंद्र शाह ने ठीक ही सवाल उठाया है, "हमारे समय की आधुनिक चुनौतियां क्या हैं और पश्चिम की सर्जनशीलता से प्रभावित हमारी संवेदना ने अपने संस्कारगत अस्तित्व और परिवेशगत यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में उन चुनौतियों का प्रत्युत्तर किस तरह ढूंढा या दिया है।[22] रमेशचंद्र शाह जब हिन्दी–आधुनिकतावाद की सर्जनशीलता के बारे में प्रश्न खड़ा करते हैं तो उसका कारण भी बहुत स्पष्ट सा है कि वे यूरोपीयय आधुनिकतावाद से ही बहुत सन्तुष्ट नहीं हैं और उसे ही आरोपित मानते हैं। उन्होंने लिखा है, "यूरोप में भी आधुनिकता की एक बुनियादी शर्त मान ली गई है – ध्वंस, पतन, विघटन के क्रास पर जीवन को अर्थ देने का प्रयत्न ऊपर से लादे गए आरोपित जीवन–मूल्यों के प्रति विद्रोह।[23]

आत्मपरायापन या अलगाव बोध

निश्चय ही यूरोपीय सभ्यता और समाज के अर्न्तविरोध और संकट यूरोपीय आधुनिकतावाद की सर्जनशीलता के लिए स्वाभाविक थी पर हिन्दी की आधुनिकतावाद के लिए नहीं। जैसा कि निर्मल वर्मा ने स्वीकार करते हुए लिखा है, "इस आंदोलन के जो अपने अन्तर्द्वन्द्व थे, जो यूरोपीय मनीषा के लिए बहुत स्वाभाविक थे, नैसर्गिक थे, ऐतिहासिक प्रक्रिया का अंग थे, जिनसे हम अजनबी थे, जिनसे हम बाहर थे। लेकिन हमारी ऐतिहासिक स्थिति ऐसी थी कि हम सोचते थे कि अगर हम

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपने को, अपने लेखन को, अपनी कला को, अपने बिम्बों को इस आधुनिकता के ढांचे में कहीं–न–कहीं फिट कर पायेंगे तो शायद हम टॉमस मान, काफ्का, कामू, पिकासो, पाल क्ले के आस–पास कहीं अपनी उपलब्धियों को सार्थकता दे पायेंगे।[24] निर्मल वर्मा का यह कथन यूरोपीय आधुनिकतावाद पर टिप्पणी तो करता ही है स्वयं हिन्दी में विकसित आधुनिकतावादी अवधारणा की वास्तविकता पर भी टिप्पणी करता ही है। क्योंकि यह यूरोपीय और भारतीय दो स्थितियों की वास्तविकता का विश्लेषण और स्वीकार है। इन भिन्न–भिन्न स्थितियों की वास्तविकता के बारे में निर्मल वर्मा ने आगे भी लिखा है, "आधुनिक आंदोलन की ऊर्जा को पश्चिम के कलाकारों ने, जिन कलाकृतियों में प्रतिध्वनित किया है, जिन शर्तों पर किया है, जिन मर्यादाओं के भीतर उन्होंने मनुष्य और समाज, व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच सम्बन्ध, व्यक्ति और काल का अनुपात, जोकि आधुनिक आंदोलन के सरोकार रहे हैं–उन्हें हमने जाना नहीं नहीं। मैं बाहर का आदमी हूं, मैं कलाकार हूं, मैं किस तरह से इस समाज का अंग बन पाऊं ! बुर्जुआ कलाकार की वेदना जो हमें टॉमस मान के 'टोनियो क्रागर' में मिलती है। यह कहानी बीसवीं शताब्दी के शुरू में लिखी गयी थी। लोग नाच रहे हैं, हंस रहे हैं, प्रेम कर रहे हैं–यह जो कष्ट है, यह हमने कभी भोगा नहीं, क्योंकि वैसे अलगाव की स्थिति हमारे देश में नहीं थी, सच पूछा जा तो।[25]

नया काल–बोध

हिन्दी के महत्त्वपूर्ण आधुनिकतावादी कवि अज्ञेय ने आधुनिकतावादी अवधारणा को काल की अवधारणा से सम्बद्ध करके देखा है। उन्होंने लिखा है, "किसी भी कला में आधुनिकता की विकास प्रक्रिया देखने चलें तो हम पाएंगे कि उसके मूल में यह नया काल–बोध ही है, काल के साथ नया सम्बंध ही है। मानस का विखंडन, खंडित बिम्ब, अमूर्तन, अतियथार्थ की प्रस्तुति, मिथक और फैंटेसी, कारण और कार्य में विपर्यय अथवा अहेतुक घटना, 'मुक्त छन्द' ताल और लय की टकराहट अथवा संकट–किसी भी कला में कोई नयी प्रवृत्ति लीजिए तो यह कहीं–न–कहीं नए काल बोध से उसके सम्प्रेषण के प्रयत्न से जुड़ जाएगी।[26] अज्ञेय आधुनिकता को एक नए ढंग का काल–बोध मानते हैं और उसे संवेदन के संस्कार के रूप में स्वीकार करते हैं, जो विज्ञान की देन है। अज्ञेय ने लिखा है, "आधुनिकता जिस नए प्रकार का काल–बोध है, यह दोनों प्रकार के लाल की अवधारणा को स्वीकार करता है और समानान्तर रखता है, समपदीय महत्त्व देता है, और इतना ही नहीं, यह भी समझता है कि विज्ञान की प्रगति ने ही यह सम्भव बनाया है कि हम काल की इतने प्रकार की गतियों को पहचाने और एक साथ स्वीकार करें। और काल गति का यही स्वीकार ही वास्तव में आधुनिक संवेदन है, आधुनिकता है।[27]

आधुनिकतावाद के साहित्यिक और कलात्मक आंदोलन और इसके अवधारणा के रूप में विकसित होने के बारे में आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है, "वस्तुत: आधुनिकता अवधारणा के रूप में जब बनी और प्रचलन में आई, तब आधुनिकतावादी साहित्य समाप्त हो चुका था। 'कांसेप्ट' के रूप में आधुनिकता दूसरे महायुद्ध के बाद की सृष्टि है, 1950 के आसपास की। प्रचलन में उसके बाद आई। उस समय चर्चा आधुनिकतावाद की नहीं हुआ करती थी, उस समय चर्चा सिम्बालिज्म एक्सप्रेसनिज्म, सुर्रियालिज्म आदि की हुआ करती थी। इन तमाम को एक कम्बल में बांधकर एक मटकिया में अँचार की तरह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 8, August 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ढालकर हिलाकर एक मोटामोटी मॉडिज्म की सृष्टी की गई, यह भूलकर कि ये सारे वाद कई बार परस्पर विरोधी थे। सिम्बलिज्म और सुर्रिलिज्म एक–दूसरे के घोर विरोधी थे, एक ही नहीं थे।[28] आधुनिकतावाद की राजनीतिक विचारधारा या दर्शन के बारे में उन्होंने लिखा है, "आधुनिकतावाद नाम की अवधारणा, सिद्धांत या आईडियोलॉजी के रूप में दूसरे महायुद्ध के बाद की सृष्टि है और इसलिए इस पर शीतयुद्ध की गहरी छाप है। इसीलिए कुछ लोगों का कहना है कि अवधारणा के रूप में यह एम्पटी कान्सेप्ट है। एम्पटी इसलिए है कि इसका जो 'रिफरेन्ट' है वह सुनिश्चित नहीं है। जिसका रिफरेन्ट सुनिश्चित नहीं हो उसका चाहे जो अर्थ ले लिजिए, चाहे वह परस्पर विरोधी ही क्यों न हो।"[29]

इस तरह से आधुनिकतावादी साहित्यांदोलन का एक अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप हमारे सामने आता है जिसे लेखकों और विद्वानों ने भिन्न–भिन्न तरीके से पारिभाषित और व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

आधुनिकतावादी साहित्य और चिंतन बीसवी शताब्दी की उस संक्रांति और गहन चिंता को अभिव्यक्त करता है जो तत्कालीन समाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, दार्शनिक और बौद्धिक चिंतन के संघर्ष में विद्यमान था और जिनसे संघर्ष करके आधुनिकतावादी साहित्य ने अपना युगपात अस्तित्व रचा था। भिन्न साहित्य कलागत आंदोलनों के साथ यह विकसित और अविकसित देशों की राष्ट्रीय सीमाएँ पार करता हुआ उनकी अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषिक परम्परा में अभिव्यक्त हुआ। बाद में इन विभिन्न आंदोलनों को आधुनिकतावाद के नाम से अभिहित किया गया।

इस तरह आधुनिकतावाद एक समावेशी आंदोलन के रूप में हमारे सामने दृष्टि का एक नया उन्मेष लिए आता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. गंगाप्रसाद विमल, आधुनिकता साहित्य के संदर्भ में, पृ. 39
2. धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ. 20
3. धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ. 20
4. कुवंरपाल सिंह, साहित्य और राजनीति, पृ. 118
5. कुवंरपाल सिंह, साहित्य और राजनीति, पृ. 116
6. अशोक बाजपेयी, सीताकांत महापात्र की प्रतिनिधी कविताएँ, भूमिका, पृ. 7
7. मैनेजेर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि, पृ. 37
8. लक्ष्मीकांत वर्मा, नयी कविता के प्रतिमान, पृ. 265
9. रमेश कुन्तल मेघ, आधुनिकता और आधुनिकीकरण, पृ. 314
10. विजयदेव नारायण साही, अज्ञेय द्वारा सम्पा. सर्जन और सम्प्रेषण, पृ. 41

11. विपिन कुमार अग्रवाल, आधुनिकता के पहलू, पृ 18
12. रघुवंश, आधुनिकता और सर्जनशीलता, पृ 34
13. अज्ञेय द्वारा सम्पा. सर्जन एवं सम्प्रेषण, पृ 51
14. धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ 19
15. धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ 19
16. रमेश कुंतल मेघ, आधुनिकता और आधुनिकीकरण, पृ 281
17. विष्णुचंद्र का आधुनिकता पर लेख न.मा.टा., 11 अगस्त, 1991
18. धनंजय वर्मा, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय, पृ 248
19. रघुवंश, आधुनिकता और सर्जनशीलता, पृ 34
20. रघुवंश, आधुनिकता और सर्जनशीलता, पृ 34
21. गंगाप्रसाद विमल, आधुनिकता साहित्य के संदर्भ में, पृ 182
22. रमेशचंद्र शाह, आधुनिकभावबोध और भारतीयता, परिशोध, अंक 20, पृ 37–41
23. रमेशचंद्र शाह, आधुनिकभावबोध और भारतीयता, परिशोध, अंक 20, पृ 37–41
24. अज्ञेय द्वारा सम्पा. सर्जन और सम्प्रेषण, पृ 28
25. अज्ञेय द्वारा सम्पा. सर्जन और सम्प्रेषण, पृ 29
26. अज्ञेय, धार और किनारे, पृ 100
27. अज्ञेय, धार और किनारे, पृ 99
28. नामवर सिंह, पूर्वग्रह, अंक 70–71, पृ 6
29. नामवर सिंह, पूर्वग्रह, अंक 70–71, पृ 6